भविष्य की ओर शिक्षा— एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के सिद्धांतों का अध्ययन

दानिश अहमद*
हिमांशी**
विवेक सिंह***

यह शोध-पत्र विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दूरदर्शी संकल्पनाओं को व्यावहारिक एवं सुदृढ़ शैक्षिक सुधारों से जोड़ने का प्रयास है। यह अध्ययन गुणात्मक विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति पर आधारित है, जिसमें नीति दस्तावेजों, पूर्ववर्ती पाठ्यचर्या रूपरेखाओं तथा प्रासंगिक अनुसंधान साहित्य की सुव्यवस्थित समीक्षा सम्मिलित है। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक सशक्त विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है तथा यह रचनावाद, आधुनिक शिक्षाशास्त्र और मानव पूंजी सिद्धांत जैसे सुदृढ़ सैद्धांतिक ढाँचों पर आधारित है। यह पाठ्यचर्या रूपरेखा समावेशिता, बहुभाषी शिक्षा, डिजिटल एकीकरण, अनुभवात्मक अधिगम तथा 21वीं सदी के कौशलों को विद्यालयी शिक्षा के मूलभूत आधार के रूप में स्थापित करती है। इसके अतिरिक्त, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 सामाजिक-भावनात्मक विकास, मूल्यपरक शिक्षा तथा करियर मार्गदर्शन को विद्यालयी शिक्षा के अनिवार्य स्तंभों के रूप में प्रस्तुत करती है, जिससे विद्यार्थियों का समग्र एवं संतुलित विकास सुनिश्चित हो सके। यह रूपरेखा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को अधिक अर्थपूर्ण, प्रासंगिक और जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

समग्रतः, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 भारतीय शिक्षा प्रणाली को समावेशी, न्यायसंगत, गुणवत्तापूर्ण और भविष्य-उन्मुख बनाने की व्यापक क्षमता रखती है तथा यह विद्यालयी शिक्षा को राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों से प्रभावी रूप से जोड़ने का एक सशक्त वैचारिक एवं संरचनात्मक आधार प्रदान करती है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली ने कई सुधारात्मक चरणों से गुजरते हुए सांस्कृतिक, भाषायी और आर्थिक विविधताओं से भरे राष्ट्र की जटिलताओं को संबोधित करने का प्रयास किया है। आरंभिक पाठ्यक्रम सुधार मुख्यतः उपनिवेशोत्तर भारत को एकीकृत करने और व्यापक निरक्षरता से

*शोधार्थी (एम.एड.), शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211 002
**शोधार्थी (एम.ए.), शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211 002
****सहायक आचार्य*, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211 002

निपटने पर केंद्रित थे। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप क्रमशः 1975, 1988, 2000 और विशेष रूप से 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) बनाई गई। एन.सी.एफ. 2005 ने बाल-केंद्रित शिक्षण, रचनावादी दृष्टिकोण और समावेशी शिक्षा पर बल दिया, लेकिन इसके कार्यान्वयन में शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, आधारभूत संरचना का अभाव और रटंत शिक्षण की परंपरा जैसी गंभीर बाधाएँ सामने आईं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 ने शिक्षा को अधिक समग्र, बहु-विषयक, समावेशी और लचीली बनाने की व्यापक दृष्टि प्रस्तुत की। नीति संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, नैतिक और जीवन कौशलों के विकास पर बल देती है। यह मूल्यांकन की कठोरता और भारी-भरकम पाठ्यक्रम की जगह सोच, रचनात्मकता और संचार-केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक सुधार पारंपरिक 10+2 प्रणाली को 5+3+3+4 रूपरेखा से प्रतिस्थापित करना है, जो बाल विकास के विभिन्न चरणों के अनुकूल है (रा.शै.अ.प्र.प., 2023)। एन.ई.पी. 2020 की दृष्टि को कार्यरूप देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) ने 2023 में विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) विकसित किया। इस रूपरेखा को 13 लाख से अधिक हितधारकों से परामर्श लेकर तैयार किया गया और इसमें 21वीं सदी की शिक्षा के मूल सिद्धांत शामिल किए गए। यह रूपरेखा अंतःविषयक शिक्षण, मूल्य शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षण, विषयों की लचीलता तथा पहुँच और परिणामों में समानता पर बल देती है (रा.शै.अ.प्र.प., 2023)। यह एकसमान दृष्टिकोण को त्यागकर विद्यार्थी-केंद्रित, अनुकूलनीय और संदर्भ-संवेदनशील शिक्षण को बढ़ावा देता है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली में लंबे समय से मौजूद समस्याओं जैसे कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में असमानता, वंचित समूहों का बहिष्करण, बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक क्षमता की कमी तथा रचनात्मकता के लिए सीमित स्थान को दूर करना है। पूर्ववर्ती रूपरेखाओं की तुलना में, जो अक्सर नीति को व्यावहारिक परिवर्तन में बदलने में असफल रहीं, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक ठोस और क्रियाशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसमें रचनावाद, समावेशी शिक्षाशास्त्र और समग्र विकास को मूल आधार माना गया है (रा.शै.अ.प्र.प., 2023)। इस अध्ययन का उद्देश्य यह मूल्यांकन करना है कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 किस हद तक अपने घोषित लक्ष्यों को एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप पूरा करता है। शोध प्रमुखतः रूपरेखा के मुख्य सिद्धांतों के विश्लेषण पर केंद्रित है। यह विश्लेषण यह जाँचने का प्रयास करता है कि क्या यह रूपरेखा वास्तव में समावेशी और डिजिटल शिक्षण पद्धतियों को प्रोत्साहित करती है, डिजिटल खाई को पाटती है और सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, पर्यावरणीय जागरूकता और लोकतांत्रिक मूल्यों को शामिल करती है (शिक्षा मंत्रालय, 2020; रा.शै.अ.प्र.प., 2023)।

संक्षेप में, यह अध्ययन गुणात्मक विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग करके एन.सी.एफ.-एस.ई.

2023 की नीति, पाठ्यचर्या सिद्धांत, समावेशी शिक्षाशास्त्र और शैक्षिक सुधारों के दृष्टिकोण से मूल्यांकन करता है, ताकि यह आकलन किया जा सके कि इसका परिवर्तनकारी दृष्टिकोण वास्तव में क्रियान्वित किया जा सकता है या नहीं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) भारत में विद्यालयी शिक्षा को दिशा देने वाला एक मार्गदर्शक दस्तावेज है। 1975 में पहली बार प्रस्तुत होने के बाद से, इसे क्रमशः कई बार संशोधित किया गया है, 1988, 2000, 2005 और हाल ही में 2023 में, ताकि देश की बदलती सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप इसे अद्यतन किया जा सके। प्रत्येक संस्करण ने समान पहुँच, समावेशन, समग्र विकास और डिजिटल एकीकरण जैसे प्राथमिकताओं में महत्वपूर्ण बदलावों को रेखांकित किया है।

एन.सी.एफ. 1975— यह स्वतंत्रता के बाद का भारत का पहला समेकित शैक्षिक प्रयास था जिसे रा.शै.अ.प्र.प. ने विकसित किया था। इसने 'सामान्य विद्यालय प्रणाली' की संकल्पना पर जोर दिया, जिससे असमानताओं को कम किया जा सके और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिल सके। इस रूपरेखा ने विद्यार्थी-केंद्रित अधिगम, व्यावसायिक शिक्षा, और पाठ्यक्रम के भार को घटाने पर बल दिया। साथ ही, क्षेत्रीय अनुकूलन और पाठ्यक्रम की नियमित समीक्षा की आवश्यकता को भी रेखांकित किया गया। हालाँकि, ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत रूपरेखा की कमी के कारण इसके क्रियान्वयन में बाधाएँ आईं।

एन.सी.एफ. 1988— यह रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 से जुड़ी हुई थी और इसका उद्देश्य वर्ष 2000 तक सार्वभौमिक प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करना था। इसने ड्रॉपआउट दरों और साक्षरता के अंतर को दूर करने पर बल दिया, विशेषकर वंचित वर्गों के बीच 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से प्राथमिक विद्यालयों की आधारभूत संरचना को सुदृढ़ किया गया। इस रूपरेखा ने समानता, मूल्य शिक्षा, पर्यावरणीय चेतना और व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया। हालाँकि, संसाधनों की कमी के कारण इसकी पहुँच सीमित रही।

एन.सी.एफ. 2000— यह वैश्वीकरण और तकनीकी युग के साथ भारत की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है। इसने कक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) को शामिल किया और मूल्य आधारित, समग्र शिक्षा को बढ़ावा दिया। इस रूपरेखा ने पाठ्यक्रम के अधिक बोझ को कम करने और आनंददायक अधिगम को प्रोत्साहित किया। निरंतर और समग्र मूल्यांकन (सी.सी.ई.) मॉडल को लागू किया गया, ताकि अकादमिक और व्यक्तिगत विकास दोनों का आकलन किया जा सके। हालाँकि, सीमित संसाधन वाले क्षेत्रों में इसका प्रभाव सीमित रहा।

एन.सी.एफ. 2005— यह एक निर्णायक बदलाव था, जिसमें रचनावादी और बाल-केंद्रित अधिगम को अपनाया गया। वैश्विक शैक्षिक सुधारों की पृष्ठभूमि में विकसित यह रूपरेखा समावेशन, सोच और वास्तविक जीवन के संदर्भों पर आधारित अधिगम को प्रोत्साहित करती है। इसने स्थानीय ज्ञान को

पाठ्यक्रम में शामिल करने और विद्यार्थी के समग्र विकास के लिए सी.सी.ई. प्रणाली को परिष्कृत करने की वकालत की। शिक्षक प्रशिक्षण और आधुनिक शिक्षण विधियों पर भी ज़ोर दिया गया। यह संस्करण आज भी भारत की कक्षाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023— यह एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप एक भविष्य उन्मुख दृष्टि को प्रस्तुत करता है। यह बुनियादी साक्षरता, दक्षता आधारित अधिगम और संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं शारीरिक क्षेत्रों में समग्र विकास को प्रोत्साहित करता है। यह रूपरेखा लचीले शिक्षण मार्गों का समर्थन करती है, जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चुनाव कर सकें। यह प्रारंभिक शिक्षा में क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से बहुभाषी शिक्षा की वकालत करता है। डिजिटल एकीकरण इस रूपरेखा की प्रमुख विशेषता है, जिसमें ई-लर्निंग उपकरणों और संसाधनों को शिक्षण में शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह अनुभवात्मक अधिगम, जीवन कौशल, कला और खेलों को भी मुख्य पाठ्यक्रम का हिस्सा मानती है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक समतामूलक, वैयक्तिकृत और प्रौद्योगिकी समर्थित शिक्षा प्रणाली की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम है, जो विद्यार्थियों को 21वीं सदी के लिए तैयार करता है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

शैक्षिक अनुसंधान में एक ठोस सैद्धांतिक रूपरेखा आवश्यक होती है, विशेषकर जब किसी नीति दस्तावेज जैसे कि विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 का विश्लेषण करना हो। सैद्धांतिक दृष्टिकोण उस विचारधारा, संरचना और शिक्षण रणनीतियों को समझने की नींव प्रदान करता है, जिनके आधार पर यह रूपरेखा निर्मित हुई है। इस अध्ययन में चार पूरक सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को अपनाया गया है— रचनावाद, पाठ्यचर्या सिद्धांत, शिक्षाशास्त्र, और मानव पूंजी सिद्धांत। ये दृष्टिकोण यह स्पष्ट करते हैं कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 अधिगम, पाठ्यचर्या लक्ष्यों, समावेशन और राष्ट्रीय विकास में शिक्षा की भूमिका को किस प्रकार संबोधित करता है।

रचनावाद

रचनावाद अधिगम को सक्रिय और अनुभवात्मक प्रक्रिया मानता है। पियाजे और वायगोत्स्की की अवधारणाओं से प्रेरित एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 खेल-आधारित और परियोजना-आधारित अधिगम को महत्व देता है। इसमें चरणवार संरचना और निकटतम विकास क्षेत्र की धारणा अपनाई गई है, जिससे विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास सुनिश्चित होता है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थी-केंद्रित और खोजपरक शिक्षा को प्रोत्साहित करता है।

पाठ्यचर्या सिद्धांत

पाठ्यचर्या सिद्धांत शिक्षा को सामाजिक, दार्शनिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में समझाता है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 पाठ्यचर्या को केवल दिशानिर्देश न मानकर सामाजिक न्याय और समानता का साधन मानता है। इसमें लचीलापन, क्षेत्रीय अनुकूलन और शिक्षक स्वायत्तता पर बल दिया गया

है। मातृभाषा, स्थानीय संस्कृति, मूल्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता को जोड़कर यह रूपरेखा शिक्षा को अधिक प्रासंगिक और जीवनोन्मुख बनाती है।

शिक्षाशास्त्र

शिक्षाशास्त्र संवाद व सहभागिता पर बल देता है। पाउलो फ्रेरे की सोच से प्रभावित एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 समावेशिता, समान अवसर और मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देता है। यह विद्यार्थियों को सामाजिक प्रश्न उठाने, चिंतन करने और परिवर्तनकारी भूमिका निभाने के लिए सक्षम बनाता है। सहानुभूति, नागरिकता और नैतिकता को जोड़कर यह शिक्षा को अधिक जागरूक और उत्तरदायी बनाता है।

मानव पूंजी सिद्धांत

मानव पूंजी सिद्धांत शिक्षा को आर्थिक विकास से जोड़ता है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 इस दृष्टिकोण को दक्षता-आधारित अधिगम, व्यावसायिक शिक्षा और डिजिटल साक्षरता के माध्यम से आगे बढ़ाता है। इसमें 21वीं सदी के कौशल, जैसे— सोच, रचनात्मकता, संचार और सहयोग पर बल है। यह शिक्षा को करियर तैयारी और जीवनभर सीखने से जोड़ता है, जिससे विद्यार्थी वैश्विक प्रतिस्पर्धा और रोजगार की आवश्यकताओं के लिए तैयार हो सकें।

यह चारों सैद्धांतिक दृष्टिकोण— रचनावाद, पाठ्यचर्या सिद्धांत, शिक्षाशास्त्र और मानव पूंजी सिद्धांत – एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। ये यह स्पष्ट करते हैं कि यह रूपरेखा किस प्रकार शैक्षणिक उत्कृष्टता और समानता, आर्थिक लक्ष्यों और नैतिक मूल्यों तथा मानकीकरण और संदर्भानुकूलता के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करती है। इन सैद्धांतिक आधारों को समझना इस मूल्यांकन के लिए आवश्यक है कि यह रूपरेखा एन.ई.पी. 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप भारतीय शिक्षा को परिवर्तनशील दिशा में ले जाने में सफल होगा या नहीं।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

पाठ्यचर्या रूपरेखाओं के विकास और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के मूल्यांकन के लिए पूर्ववर्ती साहित्य की समीक्षा आवश्यक है। कई अध्ययनों ने शिक्षा सुधारों की दिशा, पहुँच और समानता के प्रयासों तथा क्रियान्वयन की चुनौतियों की पड़ताल की है। शर्मा (2023) ने मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर यह दिखाया कि एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-भावनात्मक वृद्धि, प्रेरणा और चिंतन जैसे साझा स्तंभों पर टिके हैं और उनका एकीकरण विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करता है। कुमार 2023 ने एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 में करियर मार्गदर्शन और व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया, किंतु प्रशिक्षित परामर्शदाताओं और शिक्षक प्रशिक्षण की कमी को चुनौती बताया। शुक्ला, प्राची और नेगी (2024) ने शारीरिक शिक्षा को स्वास्थ्य और सामाजिक कौशल के लिए महत्वपूर्ण माना पर संसाधनों और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी को कार्यान्वयन की बाधा बताया। गोस्वामी (2023) ने राजस्थान में शिक्षकों की जागरूकता का अध्ययन किया और पाया कि अधिकांश शिक्षक इस नई रूपरेखा से अपरिचित हैं,

जबकि वे इसके प्रमुख क्रियान्वयनकर्ता हैं। यह तथ्य प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता को रेखांकित करता है। प्रजापति 2023 ने तर्क दिया कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के लक्ष्यों को पूरा करने हेतु शिक्षकों को रटंत पद्धति से आगे बढ़कर सोच, रचनात्मकता, टीमवर्क और संचार जैसे कौशलों पर आधारित रणनीतियाँ अपनानी होंगी। शांडिल्य (2025) ने भारतीय ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण को इस रूपरेखा की विशेषता बताया, जिससे शिक्षा सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनती है। मेहरा और सिंह 2025 ने अनुभवात्मक अधिगम को विद्यार्थियों की वैचारिक समझ और 21वीं सदी के कौशलों के विकास के लिए प्रभावी माना और विद्यालय प्रशासन से इसके लिए लचीला समर्थन सुझाया। इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक बहु-आयामी दस्तावेज है जिसमें मनोवैज्ञानिक सिद्धांत, कौशल-आधारित अधिगम, शारीरिक शिक्षा, शिक्षक तैयारी, सांस्कृतिक एकीकरण और अनुभवात्मक शिक्षण सभी को समाहित किया गया है। फिर भी, साहित्य में कुछ सीमाएँ स्पष्ट हैं। अधिकांश अध्ययन किसी एक ही पहलू, जैसे— शारीरिक शिक्षा, करियर मार्गदर्शन या अनुभवात्मक अधिगम पर केंद्रित हैं। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की समग्र संरचना और उसकी सैद्धांतिक नींव पर दृष्टि अभी अपेक्षाकृत कम है। विशेष रूप से, रचनावाद, पाठ्यचर्या सिद्धांत, शिक्षाशास्त्र और मानव पूंजी सिद्धांत जैसे ढाँचे अब तक कम उपयोग हुए हैं, जबकि इनके माध्यम से यह समझा जा सकता है कि खेल-आधारित अधिगम, समावेशन, मूल्य शिक्षा और व्यावसायिक कौशल किस प्रकार दस्तावेज के भीतर जुड़े हैं।

इसी आधार पर यह अध्ययन अपना औचित्य पाता है। यह शोध न केवल एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के आदर्शों की विवेचना करता है, बल्कि उनकी व्यावहारिक चुनौतियों की भी जाँच करता है। मूल्यांकन की अस्पष्टता, अवसंरचना और संसाधनों की असमानता, शिक्षक प्रशिक्षण की कमी और परीक्षा-प्रधान संस्कृति जैसी समस्याओं को सामने लाकर यह नीति और व्यवहार के बीच की खाई को उजागर करता है। इस प्रकार, यह अध्ययन एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की सैद्धांतिक और व्यावहारिक नींव का एकीकृत मूल्यांकन प्रस्तुत करता है और संकेत देता है कि सफलता केवल दस्तावेजी आदर्शों पर नहीं, बल्कि ठोस क्रियान्वयन रणनीतियों पर निर्भर है।

कार्यप्रणाली

अनुसंधान रूपरेखा

इस अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने गुणात्मक अनुसंधान डिजाइन को अपनाया है, जो कि उपलब्ध नीति दस्तावेजों की विषयवस्तु विश्लेषण पर आधारित है। यह अनुसंधान डिजाइन एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के सिद्धांतों का गहन अध्ययन करने और उसकी व्याख्या हेतु उपयुक्त रहा।

डेटा संग्रहण की विधि

शोधकर्ता ने इस अध्ययन हेतु एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 से संबंधित आधिकारिक दस्तावेजों को प्राथमिक स्रोत के रूप में लिया, जिनमें सरकारी प्रकाशन, नीति-पत्र और दिशानिर्देश शामिल थे। इसके अतिरिक्त,

शोध-पत्रों और पत्रिकाओं जैसे द्वितीयक स्रोतों की भी समीक्षा की गई।

डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया

डेटा विश्लेषण के लिए प्रमुख रूप से विषयवस्तु विश्लेषण को अपनाया गया, जिससे रूपरेखा में प्रस्तुत प्रमुख सिद्धांतों की पहचान और वर्गीकरण किया जा सका। इस प्रक्रिया में दस्तावेजों की व्यवस्थित समीक्षा और मूल्यांकन शामिल था।

डेटा विश्लेषण

इस खंड में विषयगत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अनुसंधान उद्देश्य के अंतर्गत तीन मुख्य विषय और प्रत्येक के दो उप-विषय शामिल किए गए हैं।

अनुसंधान उद्देश्य— विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के प्रमुख सिद्धांतों का अध्ययन।

विषय 1— समग्र विकास और लचीलापन

उप-विषय (क)— संज्ञानात्मक और भावनात्मक विकास पर बल

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 शिक्षा को केवल बौद्धिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक दोनों विकास को प्रोत्साहित करता है। 'फ्रॉम द वेयर' संदेश में कहा गया है कि "शिक्षा को शैक्षणिक कौशल के साथ-साथ सहानुभूति, नैतिक सोच और भावनात्मक दृढ़ता का भी विकास करना चाहिए", जबकि 'परिचय' खंड में संज्ञानात्मक विकास को चरित्र निर्माण से जोड़ा गया है। इसी प्रकार 'लर्निंग स्टैंडर्डस' में यह मान्यता दी गई है कि शिक्षण उद्देश्यों में सामाजिक-भावनात्मक कौशल, जैसे— आत्म-नियंत्रण, सहयोग और सहानुभूति भी सम्मिलित हों। 'समावेशी सिद्धांत' खंड में यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि "हर शिक्षा की शुरुआत इस मूल विचार से होती है कि प्रत्येक बच्चा सीखने में सक्षम है। बच्चे तब सबसे बेहतर सीखते हैं जब उन्हें सम्मान, मूल्य और भागीदारी का अनुभव होता है"। यह दृष्टिकोण बाल विकास मनोविज्ञान के अनुरूप है, जहाँ भावनात्मक रूप से सहयोगी वातावरण को अधिगम के लिए अनिवार्य माना गया है। इसी क्रम में 'शारीरिक शिक्षा और आरोग्य' खंड शिक्षा को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संतुलन से जोड़ते हुए कहता है कि 'शारीरिक शिक्षा में गतिविधियाँ, व्यायाम, योग, खेल आदि। ये गतिविधियाँ दृढ़ता, टीम भावना और भावनात्मक लचीलापन विकसित करती हैं"। हालाँकि, इन आदर्शों के क्रियान्वयन में कुछ स्पष्ट चुनौतियाँ भी हैं। सामाजिक-भावनात्मक लक्ष्यों का मूल्यांकन कैसे किया जाए, यह दस्तावेज में पर्याप्त स्पष्ट नहीं है। समावेशन के सिद्धांत को व्यवहार में लाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण, पर्याप्त संसाधन, कक्षा-आकार का प्रबंधन और अवसंरचना जैसे मुद्दों का समाधान आवश्यक है। साथ ही, परीक्षा-केंद्रित शैक्षिक संस्कृति में सामाजिक-भावनात्मक और शारीरिक कार्यक्रमों को उचित प्राथमिकता दिलवाना कठिन हो सकता है। इस प्रकार, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का दृष्टिकोण व्यापक और संतुलित है, किंतु इसकी सफलता तभी सुनिश्चित होगी जब स्पष्ट लक्ष्य-निर्धारण, आकलन मानदंड, संसाधन-आधारित योजनाएँ और

शिक्षक-सक्षमकरण जैसी व्यावहारिक रणनीतियाँ सुदृढ़ रूप से लागू की जाएँ।

उप-विषय (ख)— अनुकूलनशील पाठ्यचर्या डिजाइन

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 पारंपरिक कठोर और एकसमान मॉडल को त्यागकर लचीलेपन और स्थानीय संदर्भों के अनुरूप अनुकूल मार्गदर्शन पर बल देता है। 'स्टेज डिजाइन' खंड में विद्यालयी शिक्षा को चार विकासात्मक स्तरों, आधारभूत, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक, में विभाजित किया गया है और प्रत्येक स्तर के लिए उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ व मूल्यांकन पद्धतियाँ सुझाई गई हैं। उदाहरणस्वरूप, आधारभूत स्तर में अनुभवात्मक और खेल-आधारित अधिगम को महत्व दिया गया है, जबकि मध्य और माध्यमिक स्तरों में संरचित तथा अन्वेषण-आधारित अधिगम को प्राथमिकता दी गई है। इसी प्रकार, 'शिक्षण सामग्री एवं परिवेश' खंड में कहा गया है कि 'शिक्षण एक ऐसा सुरक्षित, समावेशी और प्रोत्साहक परिवेश प्रदान करें जो प्रत्येक छात्र की भागीदारी और अधिगम को समर्थन दे'। यह कथन इस बात को रेखांकित करता है कि रूपरेखा विविध विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील है। हालाँकि, इस लचीलेपन और अनुकूलन की व्यावहारिकता पर कुछ प्रश्नचिह्न भी हैं। पहला, स्थानीय संदर्भों के अनुरूप पाठ्यचर्या का निर्माण तभी संभव होगा जब शिक्षक स्वयं सामग्री निर्माण और पद्धतिगत विविधता के लिए प्रशिक्षित व सक्षम हों, अन्यथा लचीलापन केवल दस्तावेजी प्रावधान तक सीमित रह सकता है। दूसरा, क्षेत्रीय विषमताएँ, जैसे— संसाधनों की कमी, कक्षा-आकार, भाषा विविधता और डिजिटल असमानता इस अनुकूलन को समान रूप से लागू होने से रोक सकती हैं। तीसरा, मूल्यांकन पद्धतियों में लचीलापन सराहनीय है, परंतु परीक्षा-प्रधान संस्कृति में वैकल्पिक आकलन की स्वीकृति और क्रियान्वयन एक बड़ी चुनौती बनी रहेगी। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की अनुकूलनशील पाठ्यचर्या डिजाइन विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा की दिशा में एक प्रगतिशील कदम है, किंतु इसकी वास्तविक प्रभावशीलता शिक्षकों की तैयारी, संसाधनों की उपलब्धता और मूल्यांकन प्रणाली में ठोस सुधारों पर निर्भर करेगी।

विषय 2— समावेशिता और समानता

उप-विषय (क)— विविध विद्यार्थियों के लिए पहुँच

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 समाज के सभी वर्गों चाहे वे सामाजिक, आर्थिक, भाषायी या सांस्कृतिक रूप से विविध हों, के लिए गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करता है। यह रूपरेखा 13 लाख से अधिक नागरिकों और विभिन्न हितधारकों से प्राप्त परामर्श पर आधारित है, जिससे पाठ्यचर्या में विविध आवाजों और दृष्टिकोणों का समावेश हो सका है। प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित किया गया है, ताकि विद्यार्थी अपनी पहचान से जुड़ सकें और हाशिए पर जाने से बचें। 'विद्यालयों में समावेशन' खंड में यह स्पष्ट कहा गया है कि "शिक्षा सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने का सबसे बड़ा उपकरण है। समावेशी और समान शिक्षा, जहाँ यह अपने आप में एक लक्ष्य है, वहीं यह एक समावेशी और समान समाज प्राप्त करने के लिए भी आवश्यक है"। इसके

अतिरिक्त, यह दस्तावेज सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों की चुनौतियों को रेखांकित करता है और उनके लिए लक्षित सहायता का सुझाव देता है। यह पहल दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के अनुरूप भी है, जिसमें दिव्यांग बच्चों के लिए सुगम अवसंरचना और समावेशी शिक्षण संसाधनों की आवश्यकता बताई गई है। हालाँकि, इस दृष्टि के व्यावहारिक क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं। सबसे बड़ी समस्या यह है कि क्षेत्रीय असमानताओं और संसाधनों की कमी के कारण सभी राज्यों और विद्यालयों में एकसमान स्तर पर समावेशन लागू कर पाना कठिन है। यद्यपि मातृभाषा आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने की बात कही गई है, लेकिन बहुभाषी कक्षाओं, प्रवासी आबादी और संसाधनों की कमी वाले क्षेत्रों में इसे लागू करना एक जटिल कार्य होगा। इसी प्रकार, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम के अनुरूप दिव्यांग छात्रों के लिए अवसंरचना उपलब्ध कराने का प्रावधान सराहनीय है, परंतु सरकारी और निजी विद्यालयों में इसके लिए पर्याप्त वित्तीय निवेश और प्रशासनिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, शिक्षक प्रशिक्षण और दृष्टिकोण में बदलाव भी अनिवार्य है, क्योंकि बिना प्रशिक्षित और संवेदनशील शिक्षकों के समावेशन की अवधारणा केवल दस्तावेजी प्रावधान बनकर रह सकती है। इस प्रकार, एन.सी.एफ़.-एस.ई. 2023 विविध विद्यार्थियों के लिए समावेशी शिक्षा की दिशा में एक प्रगतिशील कदम है, लेकिन इसकी सफलता पर्याप्त संसाधनों, शिक्षक-सक्षमकरण और क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने वाली ठोस रणनीतियों पर निर्भर करेगी।

उप-विषय (ख)— लिंग और सामाजिक समावेशन

एन.सी.एफ़.-एस.ई. 2023 स्पष्ट रूप से लिंग समानता और हाशिए पर पड़े समुदायों के समावेशन को अपनी प्राथमिकता मानता है। यद्यपि विस्तृत दिशानिर्देश भाग B (क्रॉस-कटिंग थीम्स— विद्यालय में समावेशन या विद्यालयी समावेशन) में दिए गए हैं, लेकिन प्रारंभिक अध्यायों में ही यह रेखांकित कर दिया गया है कि प्रत्येक विद्यार्थी को समान अवसर मिलना चाहिए। यह रूपरेखा सहभागी शिक्षण और समावेशी कक्षा संस्कृति को प्रोत्साहित करती है, ताकि जाति, लिंग, धर्म या आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर मौजूद पूर्वाग्रहों को कम किया जा सके। विशेष रूप से भाषा और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण को महत्व दिया गया है। दस्तावेज में कहा गया है— "विद्यालयों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शारीरिक और पाठ्यचर्यात्मक संसाधनों तक पहुँच समान और भेदरहित हो... विद्यालयों को जाति, लिंग, धर्म, सामाजिक-आर्थिक स्थिति या शारीरिक विशेषताओं के आधार पर असमानता को सक्रिय रूप से हतोत्साहित करना चाहिए"। इसी क्रम में, प्रारंभिक शिक्षा में घर की भाषा और क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग की अनुशंसा की गई है, ताकि विविध भाषायी पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी मुख्यधारा से बाहर न हों। साथ ही, सुरक्षित शिक्षण वातावरण पर जोर देते हुए यह कहा गया है— "विद्यालयों में डराने-धमकाने, उत्पीड़न और अपमान को सक्रिय रूप से रोका जाना चाहिए, ताकि सभी विद्यार्थियों के लिए एक सुरक्षित अधिगम परिवेश सुनिश्चित हो सके"। हालाँकि, इन

आदर्शों के व्यावहारिक कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ मौजूद हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में जाति और लिंग-आधारित भेदभाव सामाजिक संरचनाओं में गहराई से जड़े हुए हैं, इसलिए केवल नीतिगत प्रावधान पर्याप्त नहीं हैं। विद्यालय स्तर पर सुरक्षित और समावेशी माहौल बनाने के लिए निरंतर शिक्षक प्रशिक्षण, संवेदनशीलता कार्यक्रम और सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, संसाधनों और बुनियादी ढाँचे की असमान उपलब्धता भी समान अवसरों की राह में बाधा बन सकती है। मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने का विचार सराहनीय है, लेकिन प्रवासी विद्यार्थियों और बहुभाषी कक्षाओं में इसे लागू करना कठिन साबित हो सकता है। समग्र रूप से, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 शिक्षा प्रणाली में लिंग और सामाजिक समावेशन को सैद्धांतिक रूप से मजबूत आधार देता है, किंतु इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि विद्यालय स्तर पर इन प्रावधानों को किस हद तक व्यावहारिक रूप में उतारा जा सके और सामाजिक पूर्वाग्रहों से जूझ रहे विद्यार्थियों के लिए वास्तव में समान और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराया जा सके।

विषय 3— विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षाशास्त्र

उप-विषय (क)— वैयक्तिकृत अधिगम रणनीतियाँ

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 पारंपरिक एकरूप शिक्षण से हटकर वैयक्तिकृत अधिगम की दिशा में स्पष्ट परिवर्तन प्रस्तुत करता है, जहाँ विद्यार्थियों की गति, रुचि और शैली को मान्यता दी जाती है। 'परिचय' खंड में यह स्पष्ट किया गया है कि 'एक ही प्रकार की शिक्षा सभी के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती', जिससे यह संकेत मिलता है कि शिक्षा को अधिक व्यक्तिगत और लचीला बनाया जाना चाहिए। 'स्टेज डिजाइन' के तहत, सीखने की प्रक्रिया में चरणबद्ध विकास दिखता है, जो प्रारंभिक वर्षों में खेल-आधारित अधिगम से शुरू होकर आगे संरचित और अन्वेषण-आधारित शिक्षण की ओर बढ़ता है। इसी क्रम में, डिजिटल उपकरणों और अनुकूलनशील रणनीतियों को विशेष रूप से 'भाषायी शिक्षा' और 'गणितीय शिक्षा' में अपनाने की अनुशंसा की गई है। दस्तावेज इस आदर्श को रेखांकित करता है— "एक अच्छा शैक्षणिक संस्थान वह है जहाँ प्रत्येक छात्र को स्वागत और देखभाल का अनुभव हो, जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरक अधिगम परिवेश हो, और जहाँ विविध अधिगम अनुभव प्रदान किए जाते हों"। साथ ही 'शिक्षण विधि और मूल्यांकन' खंड में यह भी जोड़ा गया है कि "प्रभावी शिक्षाशास्त्र को रटंत अधिगम से आगे बढ़ते हुए संकल्पनात्मक समझ, समस्या समाधान और समूह चर्चा पर केंद्रित होना चाहिए"। हालाँकि, इस वैयक्तिकृत और विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण के व्यावहारिक कार्यान्वयन में कुछ गंभीर चुनौतियाँ हैं। सबसे पहले, भारत जैसे विशाल और विविध शिक्षा-तंत्र में कक्षाओं का आकार प्रायः बड़ा होता है, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत गति और रुचि को ध्यान में रखना शिक्षकों के लिए अत्यंत कठिन हो सकता है। दूसरा, डिजिटल उपकरणों और अनुकूलनशील शिक्षण का विचार यथार्थवादी तभी है जब सभी विद्यालयों में पर्याप्त तकनीकी संसाधन और प्रशिक्षण उपलब्ध हों, जबकि ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में यह अभी भी सीमित है। तीसरा, शिक्षकों

को इस बदलाव के अनुरूप प्रशिक्षित करना एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है; बिना शिक्षक-सक्षमकरण के, विद्यार्थी-केंद्रितता केवल सैद्धांतिक आदर्श रह सकती है। इस प्रकार, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षाशास्त्र की ओर एक सराहनीय दृष्टि प्रस्तुत करता है, किंतु इसकी वास्तविक प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करेगी कि शिक्षा प्रणाली शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधनों और मूल्यांकन सुधारों के माध्यम से इन आदर्शों को व्यवहार में उतारने की कितनी तैयारी कर पाती है।

उप-विषय (ख)— विद्यार्थी सहभागिता और सशक्तीकरण

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का एक केंद्रीय उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने अधिगम में सक्रिय भागीदार बनाना है। यह रूपरेखा अन्वेषण-आधारित, चर्चा-केंद्रित और परियोजना-आधारित विधियों को प्रोत्साहित करती है, ताकि सहयोगी और सहभागी कक्षाओं का निर्माण हो सके। 'पर्यावरणीय प्रथाएँ और सांस्कृतिक' खंड में छात्रों को विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने और खुले संवाद में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया है। इसी तरह, 'कला और शारीरिक शिक्षा' तथा 'व्यावसायिक शिक्षा' खंडों में व्यावहारिक परियोजनाओं और वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान पर बल दिया गया है। दस्तावेज में यह भी स्पष्ट किया गया है— "विद्यार्थियों को यह अनुभव होना चाहिए कि वे बौद्धिक जोखिम लेने, गलती करने और प्रयोग करने के लिए सुरक्षित हैं— बिना उपहास या दंड के भय के"। साथ ही, यह भी जोड़ा गया है कि "खेलकूद और शारीरिक शिक्षा में नियमित भागीदारी दृढ़ता, टीम भावना और लचीलापन विकसित करती है, जो शैक्षणिक और व्यक्तिगत सफलता के लिए आवश्यक हैं"। इसके अतिरिक्त, विद्यालय और समुदाय के संबंध को मजबूत करने पर जोर देते हुए कहा गया है— "विद्यालयों को स्थानीय समुदायों से सक्रिय रूप से जुड़ना चाहिए, क्योंकि कोई भी शैक्षणिक संस्थान अपने परिवेश से कटा हुआ रहते हुए प्रभावशाली रूप से कार्य नहीं कर सकता"।

हालाँकि, विद्यार्थी सहभागिता और सशक्तीकरण की यह अवधारणा व्यावहारिक स्तर पर कई चुनौतियों का सामना करती है। पहला, भारत की परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली में अन्वेषण और परियोजना-आधारित अधिगम को पर्याप्त समय और महत्व देना कठिन हो सकता है। दूसरा, बड़ी कक्षाओं में प्रत्येक विद्यार्थी को सक्रिय रूप से शामिल करना शिक्षकों के लिए चुनौतीपूर्ण है, विशेषकर तब जब संसाधन और शिक्षण सामग्री सीमित हों। तीसरा, शिक्षकों के दृष्टिकोण में भी बदलाव आवश्यक है; पारंपरिक शिक्षक-नियंत्रित कक्षाओं से विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण की ओर संक्रमण के लिए व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण और मानसिकता में परिवर्तन जरूरी है। चौथा, सामुदायिक सहभागिता की बात तो की गई है, लेकिन कई बार स्थानीय समुदायों की अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाएँ विद्यालयों के साथ सक्रिय जुड़ाव को सीमित कर सकती हैं। इस प्रकार, एन.सी. एफ.-एस.ई. 2023 विद्यार्थी सहभागिता और सशक्तीकरण की दिशा में एक प्रगतिशील दृष्टि

प्रस्तुत करता है, किंतु इसकी वास्तविक सफलता तभी संभव है जब शिक्षण संस्कृति, मूल्यांकन प्रणाली और विद्यालय-समुदाय संबंधों में ठोस और सतत बदलाव लाए जाएँ।

चर्चा

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का विश्लेषण यह दर्शाता है कि भारतीय शिक्षा नीति लगातार बदलते सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य के अनुरूप विकसित होती रही है। साहित्य समीक्षा से स्पष्ट हुआ कि पूर्ववर्ती ढाँचों, विशेषकर एन.सी.एफ. 2005 और एन.ई.पी. 2020, ने समावेशी, मूल्य-आधारित और गतिविधि-केंद्रित शिक्षण को प्रोत्साहित किया, किंतु अवसंरचना, संसाधनों और शिक्षक प्रशिक्षण की कमी ने इनके प्रभावी क्रियान्वयन को सीमित किया। हाल के अध्ययनों ने एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के विभिन्न आयामों, जैसे— करियर मार्गदर्शन, शारीरिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान प्रणालियों का एकीकरण और अनुभवात्मक अधिगम, को उजागर किया है, किंतु अधिकांश शोध एकल पहलुओं पर केंद्रित रहे हैं। इस स्थिति ने एक समग्र सैद्धांतिक और दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित किया। इसी संदर्भ में, प्रस्तुत विश्लेषण चार सैद्धांतिक दृष्टिकोणों (रचनावाद, पाठ्यचर्या सिद्धांत, शिक्षाशास्त्र और मानव पूंजी सिद्धांत) के आधार पर एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 को समझने का प्रयास करता है। रचनावाद के आलोक में यह रूपरेखा चरणबद्ध संरचना और खेल-आधारित अधिगम के माध्यम से विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। पाठ्यचर्या सिद्धांत इस दस्तावेज को केवल दिशानिर्देश न मानकर एक सामाजिक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत करता है जो शिक्षा को न्याय और समानता की दिशा में रूपांतरित करने का प्रयास करता है। शिक्षाशास्त्र के दृष्टिकोण से यह समावेश, विविधता और सुरक्षित कक्षा संस्कृति की वकालत करता है, ताकि हाशिए पर पड़े विद्यार्थी भी शिक्षा में बराबर भागीदारी कर सकें। वहीं मानव पूंजी सिद्धांत दक्षता-आधारित शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और 21वीं सदी के कौशलों को राष्ट्र के आर्थिक विकास से जोड़ता है। प्रस्तुत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 कई स्तरों पर, जैसे संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक विकास, मानकीकरण और स्थानीय लचीलापन, परंपरा और आधुनिकता, तथा आदर्श और व्यवहार के बीच, संतुलन साधने का प्रयास करता है, परंतु फिर भी, कार्यान्वयन की चुनौतियाँ गंभीर हैं। मूल्यांकन प्रणाली में सामाजिक-भावनात्मक लक्ष्यों को मापने की अस्पष्टता, संसाधनों और अवसंरचना की असमानता, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी और परीक्षा-प्रधान संस्कृति इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधक हो सकती है।

इस प्रकार, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक दूरदर्शी और बहु-आयामी रूपरेखा है, किंतु इसकी सफलता नीति के आदर्शों और व्यावहारिक यथार्थों के बीच की खाई को पाटने पर निर्भर करेगी। यह अध्ययन दर्शाता है कि जब तक शिक्षक-सक्षमकरण, मूल्यांकन सुधार और संसाधन वितरण को प्राथमिकता नहीं दी जाती, तब तक दस्तावेज की आकांक्षाएँ पूर्ण रूप से साकार नहीं हो पाएँगी।

अनुशंसाएँ

- शिक्षकों को नियमित और प्रभावी प्रशिक्षण तथा सतत व्यावसायिक विकास प्रदान किया जाना चाहिए, ताकि वे एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के नवीन शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोणों को सजीव रूप में अपनाने में सक्षम हों।
- विद्यालयों की संसाधन-संपन्नता और अवसंरचना को मजबूती से विकसित किया जाना चाहिए, ताकि सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा, शारीरिक गतिविधियाँ और डिजिटल अधिगम सुचारु और प्रभावी ढंग से लागू हो सकें।
- मूल्यांकन प्रणाली को इस तरह पुनर्गठित किया जाना चाहिए कि यह केवल संज्ञानात्मक उपलब्धियों तक सीमित न रहे, बल्कि सहानुभूति, सहयोग, रचनात्मकता और समस्या-समाधान जैसी महत्वपूर्ण दक्षताओं का भी सटीक आकलन कर सके।
- शिक्षा को स्थानीय संस्कृति और समुदाय से घनिष्ठ रूप से जोड़ा जाना चाहिए, ताकि यह केवल सैद्धांतिक आदर्श न रहकर सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में प्रासंगिक और व्यावहारिक बन सके।
- माध्यमिक स्तर पर करियर मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं को व्यापक और सुलभ रूप से उपलब्ध कराया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी अपनी रुचियों और कौशलों के अनुरूप संतुलित और भविष्य-उन्मुख निर्णय ले सकें।

निष्कर्ष

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 भारतीय शिक्षा में एक व्यापक और दूरदर्शी दस्तावेज के रूप में उभरता है, जो संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक आयामों को संतुलित करने का प्रयास करता है। यह स्पष्ट है कि यह रूपरेखा एन.ई.पी. 2020 के उद्देश्यों को मूर्त रूप देती है और विद्यार्थियों को केवल शैक्षणिक सफलता तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें सहानुभूति, नैतिकता, लचीलापन और जीवन कौशल से संपन्न बनाने का प्रयास करती है। साहित्य से मिले निष्कर्ष इस बात की पुष्टि करते हैं कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक बहु-आयामी दृष्टि प्रस्तुत करती है, चाहे वह अनुभवात्मक अधिगम हो, करियर मार्गदर्शन हो, शारीरिक शिक्षा हो या भारतीय ज्ञान प्रणालियों का एकीकरण, परंतु फिर भी चुनौतियाँ गंभीर बनी हुई हैं। मूल्यांकन प्रणाली में सामाजिक-भावनात्मक उद्देश्यों की अस्पष्टता, संसाधनों और अवसंरचना की असमानता, तथा शिक्षक प्रशिक्षण और जागरूकता की कमी इसके सफल क्रियान्वयन को सीमित कर सकती है। परीक्षा-प्रधान संस्कृति और पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ भी नई रणनीतियों को हाशिए पर धकेल सकती हैं। अतः दस्तावेज की सफलता केवल इसके आदर्शों पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक कार्यान्वयन और ठोस नीतिगत सहयोग पर निर्भर करेगी। यदि शिक्षक-सक्षमकरण, संसाधन वितरण और मूल्यांकन सुधार को प्राथमिकता दी जाए, तो एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 भारतीय शिक्षा को अधिक समावेशी, न्यायसंगत और भविष्य-उन्मुख बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध हो सकती है।

संदर्भ

कुमार, एस. 2023. विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 : करियर मार्गदर्शन अभ्यास के निहितार्थ. *इंडियन जर्नल ऑफ करियर एंड लाइवलीहुड प्लानिंग*. 12(1), पृ.सं. 58–78.

गोस्वामी, वाई. 2023. राजस्थान में शिक्षक-शिक्षार्थी शिक्षकों की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के प्रति जागरूकता पर एक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन अकैडमिक वर्ल्ड*. 2(11), पृ.सं. 50–52.

प्रजापति, ए.बी. 2025. टीचिंग एप्टीट्यूड फॉर फोस्टरिंग 21st सेंचुरी स्किल्स इन एन.सी.एफ.-एस.ई. क्लासरूम्स. अंक : अप्रैल. एस.एस.आर.एन., एल्सेवियर. 10.2139/ssrn.5132472

मेहरा, एस. और एम. सिंह. 2025. अनुभवात्मक अधिगम : एन.सी.एफ. 2023 में प्रभावी शिक्षण के लिए एक रूपरेखा. *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी*. 13(1), पृ.सं. 2960–2964.

रा.शै.अ.प्र.प. 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शर्मा, एम. 2023. मनोवैज्ञानिक स्तंभ : शिक्षा परिवर्तन में एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ. 2023 का सेतु. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड मैनेजमेंट स्टडीज*. पृ.सं. 368–371.

शांडिल्य, एस. 2025. भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) मूल्यों का स्कूल शिक्षा में वैचारिक समावेशन : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का एक नीतिगत विश्लेषण. *एजुकेशनल क्वेस्ट : इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड एप्लाइड सोशल साइंसेज*. 16(1), पृ.सं. 9–15. https://doi.org/10.30954/2230-7311.1.2025.2

शुक्ला, टी., एम. प्राची और आर. नेगी. 2024. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.एफ. 2023 : शारीरिक शिक्षा का एकीकरण और प्रभाव. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजियोलॉजी, एक्सरसाइज एंड फिजिकल एजुकेशन*. 6(2), पृ.सं. 36–38. https://doi.org/10.33545/26647249.2024.v6.i2a.115